भारत की कम्युनिस्ट पार्टी माओवादी)
दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी

प्रेस वक्तव्य

दिनांक–24 अप्रैल, 2017

मिशन–2017 को परास्त करने के लिए ही चिंतागुफा–बुरकापाल का बहादुराना हमला!
पीएलजीए एवं क्रांतिकारी जनता की जय–जयकार!

विस्थापन विरोधी, जनवादी–प्रगतिशील एवं मानवाधिकार आन्दोलनों सहित क्रांतिकारी आन्दोलन के सफाए के लिए जारी देशव्यापी फासीवादी सैनिक दमन अभियान ऑपरेशन ग्रीनहंट के हिस्से के तौर पर बस्तर में संचालित मिशन–2017 के पाशविक हमलों का माकूल जवाब देने के लिए हमारी पार्टी द्वारा चलाए जा रहे कार्यनीतिक प्रत्याक्रमण अभियान के तहत हमारी पीएलजीए ने 24 अप्रैल के दोपहर को सुकमा जिले के चिंतागुफा–बुरकापाल के पास सीआरपीएफ की 74 वीं बटालियन के जवानों पर बहादुराना हमला करके 25 जवानों को ढेर कर दिया था एवं 7 को घायल किया. पीएलजीए ने इस हमले में मारे गए जवानों के आधुनिक हथियार एवं गोली बारूद जब्त की. इस साहसिक हमले को सफलतापूर्वक अंजाम देने वाली पीएलजीए के जांबाज लाल लड़कों, कमांडरों, नेतृत्व एवं सक्रिय सहयोग करने वाली क्रांतिकारी जनता का दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी क्रांतिकारी अभिनंदन करती है और उन्हें लाल–लाल सलाम पेश करती है. इसके पहले 11 मार्च को भेज्जी–इंजिरम मार्ग पर कोत्ताचेरुवु के पास किए गए इसी तरह के एक और बड़े हमले में पीएलजीए ने सीआरपीएफ के 12 जवानों को ढेर किया था, कइयों को घायल किया था और इस तरह पीएलजीए को जवानों से जब्त हथियारों से लैस किया गया था.

दरअसल ये कार्यनीतिक प्रत्याक्रमण हमलें आत्मरक्षार्थ, जन दमन से जनता व क्रांतिकारी आन्दोलन को बचाने व आगे बढ़ाने के लिए किए गए हमलें हैं. पिछले साल केंद्र, राज्य सरकारों ने मिशन–2016 को संचालित किया था जिसके तहत बस्तर संभाग में अभूतपूर्व स्तर पर बर्बर दमनात्मक हथकंडे अपनाए गए थे. बड़े पैमाने पर मुठभेडों को अंजाम दिया गया था. ग्रेहाउण्ड्स व एसओजी के साथ मिलकर संयुक्त ऑपरेशन किए गए थे. दक्षिण बस्तर के बोट्टेतोंग में हमारे 9 कॉमरेडों एवं उड़ीसा के रामागुडा में 9 ग्रामीणों सहित 31 कॉमरेडों की निर्मम हत्या की गयी थी. झूठी मुठभेडों में साल भर में 100 से ज्यादा हमारे जन संगठनों, जनता ना सरकारों, ग्रामीण पार्टी निर्माणों के कार्यकर्ताओं व पीएलजीए के निहत्थे सदस्यों सहित साधारण ग्रामीणों जिनमें आदिवासी किसान, युवक–युवतियां व छात्र भी शामिल हैं, की जघन्य हत्या की गयी. मुठभेडों व झूठी मुठभेडों का सामना करते हुए मिशन–2016 को परास्त करने के लिए, क्रांतिकारी आन्दोलन, जनता एवं जनता ना सरकारों को बचाने के लिए किए जाने वाले जवाबी हमलों का हिस्सा हैं, भेज्जी एवं चिंतागुफा के हमलें. यहां यह बताना लाजिमी होगा कि हमने काफी खून बहाकर, कइयों बलिदान देकर मिशन–2016 को हराया था.

पिछले साल भर में मिशन–2016 के नाम पर आदिवासी युवतियों पर अकथनीय, पाशविक व सभ्य समाज के लिए शर्मनाक यौन हिंसा की अनगिनत घटनाओं को सरकारी सशस्त्र बलों ने अंजाम दिया था. 10 साल की बच्ची से लेकर 60 साल तक की बूढ़ी महिला तक का बलात्कार, सामूहिक बलात्कार व कइयों की हत्या तक की गयी. यह सिलसिला आज भी जारी है. ग्रामीण महिलाओं व माओवादी महिला कैडरों में फर्क करने के लिए छातियों को निचोड़, दूध निकालकर देखने की नीच व अमानवीय हरकत को सशस्त्र बल अंजाम दे रहे हैं. गिरफ्तार ग्रामीण आदिवासी महिलाओं या हमारी कार्यकर्ताओं को नंगा करके थानों व कैंपों तक घसीटकर ले जाया जाता है. महिलाओं पर यौन हिंसा को दमन के औजार के रूप में इस्तेमाल करने की सरकारों ने सशस्त्र बलों को अनुमति दे रखी है जोकि अत्यंत घृणास्पद व निंदनीय है. महिलाओं पर जारी इन घृणित अत्याचारों के खिलाफ एवं महिलाओं के सम्मान व इज्जत की खातिर किए गए हमलों के रूप में भेज्जी, चिंतागुफा हमलों को देखा जाना चाहिए.

गश्त के नाम पर डीआरजी गुण्डा बल, पुलिस व अर्ध सैनिक बल गांवों पर कहर बरपा रहे हैं. ग्रामीणों की सामूहिक व बेदम पिटाई, अवैध गिरफ्तारियां, झूठे मामलों में फंसाकर जेलों में बंद करना, बिना गवाही या झूठी गवाही के आधार पर लंबी व आजीवन कारावास की सजाएं दिलाना सशस्त्र बलों के रोजमर्रा का काम बन गया है. इसी दमन का मुकाबला करने के लिए, संघर्ष इलाकों की जनता खासकर आदिवासी जनता को इस दमन से छुटाकरा दिलाने के लिए ही जनयुद्ध के तहत भेज्जी व चिंतागुफा जैसे हमलों को अंजाम दिया जा रहा है.

आम जनता को सुविधा पहुंचाने के बहाने संसाधनों की सस्ती लूट व जन दमन के लिए ग्रामीण इलाकों में सशस्त्र बलों की आवाजाही को सुगम बनाने पुलिस व अर्ध सैनिक बलों को बड़े पैमाने पर तैनात किया गया है. गश्त अभियानों को तेज करते हुए एवं सड़क सुरक्षा व रोड़ ओपनिंग के लिए सशस्त्र बलों को तैनात करके सड़क, पुल–पुलियाओं, मोबाइल टावरों व रेल लाइन के निर्माण पर जोर

आजमाया जा रहा है. जनता के हर तरह के विरोध को दबाते हुए रावघाट, चारगांव, कुव्वे, आमदाई, तुलाड़ आदि कइयों खनन परियोजनाओं को देशी, विदेशी कॉरपोरेट घरानों के फायदे के लिए शुरु करने सरकारें एड़ी–चोटी का जोर लगा रही हैं. कुछेक खदानों को शुरु भी किया गया है. देश की प्राकृतिक व सार्वजनिक संपत्ति एवं संसाधनों को कौड़ियों के भाव लुटाया जा रहा है. इस लूट में आड़े आ रही हमारी पार्टी व पार्टी के नेतृत्व में लड़ रही पीएलजीए, जनता ना सरकारों व जन संगठनों कुल मिलाकर क्रांतिकारी आन्दोलन के खात्मे के लिए ही ग्रीनहंट अभियान एवं मिशन–2017 का बर्बर दमन जारी है. प्राकृतिक संपत्ति व संसाधनों की लूट को रोकने, समस्त जनता के हित में उनके इस्तेमाल को सुनिश्चित करने एवं उन्हें भावी पीढ़ियों के लिए बचाए रखने के लिए ही हमारी पार्टी जनयुद्ध को संचालित कर रही है और उसी के तहत भेज्जी, चिंतागुफा जैसे जवाबी हमलों को अंजाम दे रही है.

सरकारों के मार्गदर्शन में पुलिस, अर्ध सैनिक बलों के प्रत्यक्ष सहयोग व संरक्षण में गठित एवं संवर्धित असामाजिक, प्रतिक्रांतिकारी व प्रतिक्रियावादी गुण्डा गिरोहों द्वारा सामाजिक कार्यकर्ताओं, जनपक्षधर अधिवक्ताओं, पत्रकारों, सामाजिक संगठनों यहां तक कि विपक्षी राजनीतिक दलों को भी निशाना बनाया जा रहा है. एक अलोकतांत्रिक, आतंकी व फासीवादी माहौल निर्मित किया जा रहा है. भेज्जी, चिंतागुफा हमलों को इसके विरोधस्वरूप किए गए हमलों के रूप में देखा जाना चाहिए.

भेज्जी, चिंतागुफा हमलों को ब्राह्मणीय हिन्दुत्व फासीवादी संघ गिरोह द्वारा भाजपा सरकारों के प्रत्यक्ष संरक्षण व भागीदारी से एवं पुलिस बल तथा कानूनों के सहारे आदिवासियों, दलितों, धार्मिक अल्पसंख्यकों के आर्थिक व सांस्कृतिक जीवनशैली खासकर उनके खान–पान की आदतों, रीति–रिवाजों पर किए जा रहे हमलों के प्रतिरोधस्वरूप देखा जाना चाहिए.

हमारी पार्टी छत्तीसगढ़ सहित देश के तमाम देशभक्त प्रगतिशील–जनवादी ताकतों, मानवाधिकार संगठनों, जनपक्षधर अधिवक्ताओं, पत्रकारों, लेखकों, कलाकारों, फिल्मकारों, खिलाड़ियों से अपील करती है कि वे इन हमलों को उपरोक्त परिप्रेक्ष्य में देखें व समझें. हम हिंसावादी नहीं हैं. लेकिन सामंती शक्तियों, देशी–विदेशी कॉरपोरेट घरानों का प्रतिनिधित्व करने वाली केंद्र, राज्य सरकारों द्वारा हर पल, हर दिन जारी क्रूर राज्यहिंसा के प्रतिरोध में, उत्पीड़ित जनता के पक्ष में खड़े होकर अनिवार्य प्रतिहिंसा को अंजाम देने हम बाध्य हैं.

पीएलजीए के हमलों में मारे जाने वाले पुलिस, अर्ध सैनिक बलों के जवानों की लाशों के साथ हम अपमानजनक व्यवहार नहीं करते हैं. महिला माओवादियों द्वारा मारे गए जवानों के गुप्तांग काटे जाने का विकृत, झूठा व दुष्प्रचार कॉरपोरेट मीडिया द्वारा किया जा रहा है. दरअसल ऐसा व्यवहार सरकारों की शह पर पुलिस, अर्ध सैनिक बलों द्वारा किया जाता रहा है. मुठभेडों में शहीद होने वाले हमारे कॉमरेडों की लाशों को जानबूझकर क्षत–विक्षत कर रहे हैं और परिवारजनों को सौंपने में आनाकानी कर रहे हैं, सड़ने–गलने तक देरी कर रहे हैं. यहां यह बताना वाजिब होगा कि मुठभेडों में शहीद हुई हमारी महिला कार्यकर्ताओं की लाशों की अश्लील तस्वीरें खींचकर, वीडियो क्लिप बनाकर मोबाइल एप्स व इंटरनेट के जरिए जारी करने की विकृत मानसिकता की घटिया हरकतों को सशस्त्र बल अंजाम दे रहे हैं.

अंत में हम पुलिस, अर्ध सैनिक बलों के जवानों व छोटे अधिकारियों का आह्वान करते हैं कि वे शोषकों, देशी, विदेशी पूंजीपतियों, सामंतियों, भ्रष्ट राजनेताओं, बड़े ठेकेदारों, बड़े व्यापारियों, गुण्डों, विभिन्न माफियाओं विशेषकर, ब्राह्मणीय हिन्दुत्व फासीवादी संघ गिरोह जिसका चरित्र आदिवासी–दलित–धार्मिक अल्पसंख्यक–पिछड़ा वर्ग एवं महिला विरोधी है, के शासन एवं शोषण को कायम रखने के लिए, उनकी जान–माल की रक्षा के लिए जान न गंवाएं. सशस्त्र बलों के जवान व्यक्तिगत तौर पर हमारे दुश्मन नहीं हैं, वर्ग दुश्मन तो कतई नहीं हैं. लेकिन शोषणमूलक राज्यसत्ता के दमनकारी राज्य मशीनरी के हिस्से के तौर पर, जन दमन के औजार के रूप में वे चूंकि क्रांतिकारी आन्दोलन के आगे बढ़ने के रास्ते में प्रत्यक्ष रूप से आड़े आ रहे हैं, पार्टी–पीएलजीए–जनता ना सरकारों व जनता पर हमलों को अंजाम दे रहे हैं, इसलिए अनिवार्य रूप से पीएलजीए के हमलों का शिकार बन रहे हैं. इसलिए शोषित–पीड़ित जनता पर निशाना साधने की बजाय, सरकारी सशस्त्र बलों की नौकरियां छोड़कर शोषकों–उत्पीड़कों पर निशाना साधने की हम अपील करते हैं.

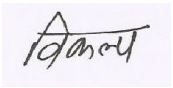

(विकल्प)
प्रवक्ता
दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी
भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)